ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj

वर्ष 44, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 दिसम्बर, 2020 से रविवार 3 जनवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से वर्चुअल रूप में मनाया गया

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 94वाँ बलिदान दिवस समारोह

25 दिसंबर 2020; नई दिल्ली।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं की ओर से आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज का 94वें बलिदान दिवस का आयोजन संपन्न हुआ। यह सर्वविदित है कि कोरोना काल के चलते कोई भी बड़ा आयोजन करना सम्भव नहीं था। किंतु आर्य समाज की आन-बान और शान के प्रतीक स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान और उनकी प्रेरणा, सेवा-समर्पण और परोपकार को कभी भी बुलाया नहीं जा सकता। चाहे हालात और परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हो फिर भी आर्य समाज के अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी की प्रेरणा आर्यजनों की सच्ची विरासत है। 25 दिसंबर को प्रात: काल स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन पर यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा साध्वी उत्तमा यति जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद देते हुए स्वामी श्रद्धानंद जी की प्रेरणा के अनुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर आर्य समाज नया बांस के पुरोहित आचार्य सहदेव शास्त्री जी भी उपस्थित थे। श्री दिनेश पथिक जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर आधारित प्रेरक और मधुर भजन प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के आदर्शों को याद करते हुए मानव मात्र को संदेश दिया कि हमें कल्याण के मार्ग पर चलने के लिए संकल्प धारण करना चाहिए। संकल्प की शक्ति ही वह शक्ति है जिसके बल पर हम कल्याण मार्ग के पथिक बन सकते हैं। श्री अशोक कुमार जी कार्यालय अध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद ने भी अपनी श्रद्धांजलि देते हुए स्वामी श्रद्धानंद जी को याद किया और उनके बताए रास्ते पर चलने की बात कही। गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डॉ. रूपकिशोर शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा किए गए समाज सुधार और उपकार के कार्यों का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया कि किस तरह महर्षि दयानंद सरस्वती जी से प्रेरित होकर स्वामी श्रद्धानंद जी ने सेवा, साधना के कीर्तिमान स्थापित किए। उनका शुद्धि आंदोलन, साम्प्रदायिक सद्भाव, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और उत्थान की भावना हम सबके लिए अत्यंत उपयोगी हैं। डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने स्वामी जी के जीवन पर आधारित दृष्टांत प्रस्तुत कर "गागर में सागर" भरने का कार्य किया। सारे कार्यक्रम का महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर ने लाइव प्रसारण कर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की कमी आर्य केंद्रीय सभा को अत्यंत महसूस हुई क्योंकि महाशय जी पिछले 12 वर्षों से आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान पद पर आसीन थे। उनका आशीर्वाद और प्रेरणा को आर्य समाज कभी भुला नहीं पाएगा। स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों में स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन परिचय प्रकाशित करवाया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद। - **सतीश चड्डा, महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली**

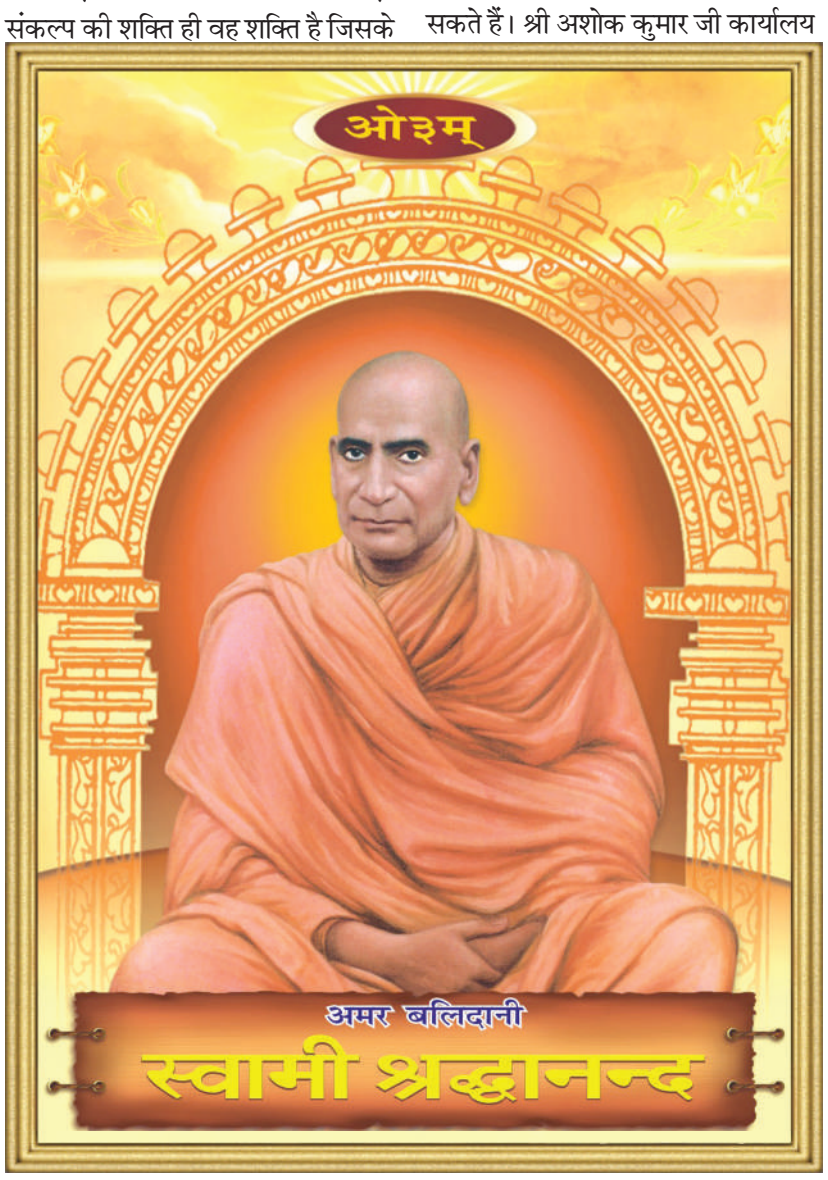

कोरोना काल को देखते हुए सांकेतिक रूप से निकाली गई बलिदान भवन से तुर्कमान गेट तक शोभायात्रा

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान भवन में यज्ञ करते आर्यजन। सांकेतिक रूप से निकाली गई शोभायात्रा का नेतृत्व करते श्री कीर्ति शर्मा जी, श्रीमती उषा किरण आर्य जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, सतीश चड्डा जी, अजय सहगल जी, हरिओम बंसल जी एवं श्री सुरिन्द्र चौधरी व अन्य अनेक आर्यजन।

एम.डी.एच. परिवार और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित कराए गए स्वामी श्रद्धानन्द जी के 94वें बलिदान दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि विज्ञापन

अन्य सम्बन्धित समाचार एवं प्रकाशित विज्ञापन पृष्ठ 4-5 पर

वेद-स्वाध्याय

द्वेष से दूर

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽ व यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।।-ऋ० 4/1/4
ऋषिः **वामदेवः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **अग्ने** = हे अग्ने! **त्वम्** = तुम **वरुणस्य** = वरुण के, पापनिवारक देव के, उसके पापबन्धन के विषय में **विद्वान्** = पूरी तरह जानते हुए **देवस्य** = देव के **हेडः** = अनादरों को **नः** = हमसे **अवयासिसीष्ठाः** = दूर करो। तुम **यजिष्ठः** = यजनीयतम **वह्नितमः** = सबसे बड़े वाहक **शोशुचानः** = और अत्यन्त प्रदीप्त हो, तुम **अस्मत्** = हमसे **विश्वा द्वेषांसि** = सब द्वेषों को **प्रमुमुन्धि** = पूरी तरह छुड़ा दो।

विनय - देवों का अनादर करना बड़ा अनर्थकारी होता है। जब हम प्रकृति के देवों का, उनके नियमों की अवज्ञा कर अनादर करते हैं, या मनुष्य-देवों (विद्वानों) का उनके उपदेशों की अवहेलना कर अनादर करते हैं, उस समय हम (न जानते हुए भी) पाप-बन्धन में गिर जाते हैं, क्योंकि हे अग्ने! ज्यों ही हम किसी धर्म-मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तुम्हारी पापनिवारक वरुण शक्ति मानो रोषयुक्त होकर उसी समय हमें बाँध लेती है और इस बन्धन से फिर हमें तभी छुटकारा मिलता है जब हम पर्याप्त दुःख भोग चुकते हैं, इसलिए हे अग्ने! तुम तो विद्वान् हो, सर्वज्ञ हो, हमारे पाप-बन्धन (वरुण) के विषय में सब-कुछ जानते हो। तुम्हीं ऐसी कृपा करो कि हम अब इन देवहेडनों (देवों के अनादरों) से दूर रहें, बचे रहें और हम कभी तुम्हारे वरुण के क्रोध के भाजन न हों, परन्तु यह तभी हो सकता है जब हमारा द्वेषों से छुटकारा हो चुका हो। हम देवों का अनादर इसीलिए करते हैं, क्योंकि हम किन्हीं तीव्र राग-द्वेषों में फँसे होते हैं, अतः हे अग्ने ! पहले तो तुम हमें द्वेष, क्रोध, हिंसा, अन्याय आदि के जंजाल से मुक्त करो। तुमसे बढ़कर इस संसार में हमारे लिए कोई यजनीय नहीं है। तुम यजनीयतम हो। यदि तुम्हारी दया से हममें यह यज्ञभावना जाग्रत् रहे, तब तो हममें द्वेष उत्पन्न ही न हो सकें, पर यदि ये उत्पन्न हों, तो भी हे वह्नितम! हे सर्वश्रेष्ठ वाहक! शुभ गुणों को प्राप्त करानेवाली तुम्हारी वाहकशक्ति के कारण ये द्वेष मुझमें ठहर न सकें, स्थिर न हो सकें और यदि ठहर भी जाएँ तो हे शोशुचान! अत्यन्त प्रदीप्त अग्ने! तुम इन्हें अपने जाज्वल्यमान तेज से भस्म कर दो, राख कर दो। अपने इन उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय के त्रिविध रूप द्वारा इस प्रकार तुम हममें से द्वेषों को समाप्त कर दो, हे अग्ने! हमारा द्वेषों से सर्वथा छुटकारा कर दो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बंगाल में बदलते राजनैतिक परिवेश पर एक चिन्तन

पश्चिम बंगाल की राजनीति लेनिन से श्रीराम तक

.....बंगाल में कहावत मशहूर है - 'करबो लरबो जितबो', इस कहावत को सौ टका सच बनाने में प्रधानमंत्री मोदी और भी जुटे और ममता बनर्जी भी, वैसे तो कहा जाता है कि दिल्ली की सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर जाता है, लेकिन बीजेपी ने दिल्ली पहुंचने के लिए उत्तर प्रदेश के साथ कोलकाता के रास्ते को भी नापना शुरू कर दिया। लेफ्ट के साथ लंबे संघर्ष के बाद ममता बैनर्जी ने बंगाल की सत्ता हासिल की थी तो अब बीजेपी बंगाल की राजनीति में अपने पैर जमा चुकी है, इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा और अमित शाह की तूफानी रणनीति बंगाल की जमीन पर रंग दिखा रही है। बिहार विजय के बाद बीजेपी रणनीतिकारों को अब कोलकाता की रायटर्स बिल्डिंग ज्यादा दूर नहीं दिख रही है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी बंगाल में दूसरे नंबर की पार्टी बन गयी।....

मे अगर पिछले कई दशक का बंगाल की राजनीति की इतिहास उठाकर देखें तो यहाँ राजनीति स्याही के बजाय खून से लिखी जाती है। एक बार फिर से बंगाल में चुनाव है और नतीजा भाजपा के सौ से अधिक कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। लेकिन इसे ठीक से ऐसे समझिये कि वामदलों के साढ़े तीन दशक चले शासन में राजनीतिक हिंसा की खूनी इबारतें निरंतर लिखी जाती रही ममता बनर्जी जब सत्ता पर काबिज हुई थीं, तब यह उम्मीद जगी थी कि बंगाल में लाल रंग का दिखना अब समाप्त हो जाएगा लेकिन धीरे-धीरे तृणमूल कांग्रेस भी वही खूनी वस्त्र धारण कर खड़ी हो गयी जो उसने कभी वामपंथियों के शरीर से उतारे थे।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का पहला सैनिक विद्रोह इसी बंगाल के कलकत्ता एवं बैरकपुर में हुआ था, जो मंगल पाण्डे की शहादात के बाद 1947 में भारत की आजादी का कारण बना। बंगाल में जब मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर राय के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार थी, तब सामाजिक व आर्थिक विषमताओं के विद्रोह स्वरूप नक्सलवादी आंदोलन उपजा। हजारों दोषियों के दमन के साथ कुछ निर्दोष भी मारे गए, इसके बाद कांग्रेस से सत्ता हथियाने के लिए भारतीय मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी के नेतृत्व में वाममोर्चा आगे आया। इस लड़ाई में भी विकट खूनी संघर्ष सामने आया और आपातकाल के बाद 1977 में हुए चुनाव में वामदलों ने कांग्रेस के हाथ से सत्ता छीन ली। लगातार 34 साल तक बंगाल में मार्क्सवादियों का शासन रहा। तृणमूल सरकार द्वारा जारी सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 1977 से 2007 के कालखंड में 28 हजार राजनेताओं की हत्याएं हुईं।

इस किस्से को कुछ यूँ भी समझ सकते हैं कि वर्ष 1977 में भारी बहुमत के साथ सत्ता में आए लेफ्ट फ्रंट ने भी कांग्रेस की राह ही अपनाई। दरअसल, लेफ्ट ने सत्ता पाने के बाद हत्या को संगठित तरीके से राजनैतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करना शुरू किया। वैसे, सीपीएम कैडरों ने वर्ष 1969 में ही वर्धवान जिले के सेन भाइयों की हत्या कर अपने राजनीतिक नजरिए का परिचय दे दिया था। वह हत्याएं बंगाल के राजनीतिक इतिहास में सेनबाड़ी हत्या के तौर पर दर्ज हैं। वर्ष 1977 से 2011 के 34 वर्षों के वामपंथी शासन के दौरान जितने नरसंहार हुए उतने शायद देश के किसी दूसरे राज्य में नहीं हुए। वर्ष 1979 में तत्कालीन ज्योति बसु सरकार की पुलिस व सीपीएम कैडरों ने बांग्लादेशी हिंदू शरणार्थियों के ऊपर जिस निर्ममता से गोलियां बरसाईं उसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं मिलती। जान बचाने के लिए दर्जनों लोग समुद्र में कूद गए थे। अब तक इस बात का कहीं कोई ठोस आंकड़ा नहीं मिलता कि उस मरीचझांपी नरसंहार में कुल कितने लोगों की मौत हुई थी। उसके बाद अप्रैल, 1982 में सीपीएम कैडरों ने महानगर में 17 आनंदमार्गियों को जिंदा जला दिया था।

इसी तरह जुलाई, 2000 में बीरभूम जिले के नानूर में पुलिस ने राजनीतिक आकाओं की शह पर जबरन अधिग्रहण का विरोध करने वाले कांग्रेस समर्थक 11 अल्पसंख्यक लोगों की हत्या कर दी थी। उसके बाद 14 मार्च, 2007 को नंदीग्राम में अधिग्रहण का विरोध कर रहे 14 बेकसूर गांव वाले भी मारे गए।

हालाँकि 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था को खोले जाने के बाद वामपंथियों का खेल खत्म होने की शुरुआत हो गई थी। आर्थिक उदारीकरण के विरोधी रहे वामपंथियों की नीतियों ने, खास कर ग्रामीण इलाकों में, रोजगार का भीषण संकट पैदा कर दिया। लोगों के पास करने को कुछ नहीं था, यही वो समय था जब पुराने नेता हाशिये पर चले गए और वामपंथी कैडरों में गुंडों और बाहुबलियों की भरमार हो गई और खासकर ग्रामीण बंगाल में, हिंसा रोजमर्रा की बात हो गई।

साल 2007 से 2011 तक का समय सर्वाधिक हिंसक वर्षों में से था। सिंगूर में टाटा नैनो कार परियोजना और नंदी ग्राम में औद्योगिकरण के लिए किसानों की जमीन के अधिग्रहण पर ममता ने आन्दोलन कर किसान समर्थक और उद्योग विरोधी हथियार का फॉर्मूला अपनाकर वाम मोर्चा की सरकार को झुका दिया। जिस लखटकिया कार के निर्माण का सपना संजोये टाटा ने बंगाल के सिंगूर का चयन किया था उन्हें अपना बोरिया-बिस्तर समेट वहां से भागना पड़ा। और तो और नंदी ग्राम परियोजना का भी वही हाल हुआ। सिंगूर और नंदीग्राम ने ममता को गांव-गांव तक पहुंचा दिया, जिसका असर 2009 के लोकसभा चुनाव में दिखा, जब ममता को जबरदस्त कामयाबी हासिल हुई। 2011 के वि.स. चुनाव में ममता ने मां, माटी और मानुष का नारा दिया और 34 सालों से चली आ रही वामपंथ सरकार को उखाड़ फेंका।

जैसे ही वामपंथियों की सरकार का अंत हुआ उनके पाले हुए राजनितिक गुंडे बेरोजगार हो गये। ममता इस बात को समझ चुकी थी कि अगर बंगाल पर लम्बा शासन करना है तो यहाँ विकास नहीं राजनितिक गुंडे अपने पक्ष में करने होंगे। हालाँकि तृणमूल ने नंदीग्राम और सिंगूर में किसानों के हिंसक आंदोलनों के सहारे सत्ता में कदम रखा था। सत्ता हासिल करने के बाद भी तृणमूल ने अपना पुराना रवैया जारी रखा। गुंडे अपने पक्ष में किये, जनता को डराने के लिए, हिंसा का सहारा लिया और सत्ता में बने रहने के लिए जाति और पहचान की राजनीति को चार कदम आगे बढाया। पिछले पंचायत चुनाव इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं कि कैसे चुनाव को अपने पक्ष में करने के लिए तृणमूल ने हिंसा का इस्तेमाल किया था।

अब राज्य के लोग भी इसके आदी हो चुके हैं। मोटे अनुमान के मुताबिक, बीते छह दशकों में राज्य में लगभग 28 हजार लोग राजनीतिक हिंसा की बलि चढ़ चुके हैं। इस दौरान यह राज्य इस मामले में देश के शीर्ष तीन राज्यों में शुमार रहा है। सत्तर-अस्सी के दशक की हिंदी फिल्मों की कहानियों की तरह खून का बदला खून की तर्ज पर यहां खूनी राजनीति का जो दौर शुरू हुआ था, उसकी जड़ें अब काफी मजबूत हो चुकी हैं। ये भी कह सकते हैं कि साउथ की मूवी की तरह यहाँ एक हीरो को खत्म करने 100 गुंडे खड़े हो जाते हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

सनातन की सुपारी लेते वामपंथी - एक व्यंग्यात्मक लेख

आ भी हाल ही वामपंथियों का एक नया शोधपत्र सामने आया है जिसमें लिखा है कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोग मोटे तौर पर मांसभक्षी थे। वे गाय, भैंस और बकरी का मांस खाते थे। सिंधु घाटी क्षेत्र में मिले मिट्टी के बर्तन और खान-पान के तौर-तरीके इस शोध के आधार हैं। ये आगे लिखते है सिंधु घाटी सभ्यता में जौ, गेहूं, चावल के साथ-साथ अंगूर, खीरा, बैंगन, हल्दी, सरसों, जूट, कपास और तिल की भी पैदावार होती थी। पशुपालन में गाय और भैंस मुख्य मवेशी थे। इलाके में मिले हड्डियों के 50-60% अवशेष गाय-भैंस के हैं जबकि लगभग 10 % हड्डियां बकरियों की हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि लोगों का पसंदीदा मांस बीफ और मटन रहा होगा।

मसलन उगाते थे जौ, गेहूं, चावल के साथ-साथ अंगूर, खीरा, बैंगन, हल्दी लेकिन खाते मांस थे, इनकी बुद्धि का नमूना इस बात से लगा सकते हैं कि वहां इंसानों के साथ मवेशियों की भी हड्डी मिली। कमाल की बात है मतलब उस दौरान पशु पक्षी मरते ही नहीं थे, सब जिन्दा रहते थे। ये जो हड्डियाँ मिली ये तो उनकी मिली जिन्हें सिंधु सभ्यता के लोगों ने मारकर खाया! चलो शुक्र मनाओ की जानवरों की हड्डियाँ भी मिल गयी वरना ये तो यहां तक लिख देते कि सिन्धु घाटी में मिले कंकालों से पता चलता है कि वो लोग एक-दूसरे को मारकर खाते थे। जैसे खुदाई के दौरान अनेकों वामपंथी, सेकुलर लिबरल लेनिन और माओ की संतानों के कंकाल इस बात के गवाह हो कि ये सब उन्होंने अपनी आँखों से देखा था।

असल में सिन्धु घाटी सभ्यता एक ऐसी सभ्यता रही है जिसे वामपंथियों ने इतना खोद दिया कि खोदते-खोदते इनकी खुदाली धरती के दूसरी और निकल गयी। क्योंकि सिन्धु सभ्यता ये शोधपत्र आर्कियोलॉजिकल साइंस जर्नल में प्रकाशित हुआ है। शोध पत्र में कहा गया है कि सिंधु घाटी के लोगों की जीवन-शैली के बारे में हालांकि कई अध्ययन हो चुके हैं, लेकिन इस शोध में मूल रूप से उस क्षेत्र में उगाई गई फसलों पर फोकस किया गया है। समग्र रूप से इस शोध में फसलों के साथ मवेशियों और लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तनों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वैज्ञानिक विधि से इन बर्तनों की पड़ताल बताती है कि प्राचीन भारत के लोग उनमें क्या खाते-पीते थे।

क्या वामपंथी बता सकते कि जब सिन्धु घाटी के लोग दाल-चावल नहीं बना सकते थे, तो इस सभ्यता के पास टाउन-प्लानिंग का ज्ञान कहां से आया और उन्होंने स्वीमिंग पूल बनाने की तकनीक कैसे सीखी? वह भी ऐसे समय जबकि ग्रीस, रोम और एथेंस का नामोनिशान भी नहीं था। ये लिखते है कि सिंधु घाटी के लोग बहुत सभ्य थे, वे नगरों के निर्माण से लेकर जहाज आदि सभी कुछ बनाना जानते थे। इस काल के नगर मिले हैं। उक्त स्थलों से प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि यहां के लोग दूर तक व्यापार करने जाते थे और यहां पर दूर-दूर के व्यापारी भी आते थे।

मसलन वामपंथी पतीली के पास बैठे करीब 21 सौ ईसा पूर्व की पतीली से पूछा! हे पतीली तेरे अन्दर क्या पकाया जाता था? पतीली बोली, वत्स वामपंथी मेरे अन्दर मांस पकाया जाता था। ये गेंहू बाजरा, सरसों, चावल तो उस समय भारत सरकार की योजना के तहत वामपंथियों को बाँट दिया जाता था। या गब्बर सिंह के आदमी कालिया और उसकी टीम लूटकर ले जाते थे और मजबूरी में सिन्धु सभ्यता के लोग फिर मांस खाते थे।

अब इनके बाद एक शोध हमें भी मिला। ये शोध बड़ा चौकाने वाला है इस शोधपत्र में सामने आया कि उस समय दूध गाय-भैंस या बकरी नहीं देती थी बल्कि वामपंथी दूध देते थे। वहां मिले जानवरों के कंकालों से पता चलता है कि गधे बर्गर खाते थे, भैंस चाऊमीन, बकरी पिज्जा, और बन्दर खेतिहर मजदूर थे सुबह दरांती-फावड़ा लेकर निकल जाते और शाम तक खेती करते थे।

इसके अलावा इंसानों के अनेकों कंकालों से पता चलता है कि उस समय के सभी वामपंथी मजदूर बंदरो के अधिकार की लड़ाई लड़ रहे थे, वो अपनी राजमाता रोमिला थापर के उपासक थे। इरफान हबीब और डी.एन. झा उनके कुल देवता थे, अरुंधती राय और शोभा डे उस समय की मशहूर राज नर्तकी थी। वामपंथी के कंकालों के पास से मिले खाली बरतन इस बात के साक्ष्य हैं कि वो तलवे चाटकर गुजर-बसर करते थे।

अगर इनके इस ताजे शोध को देखें तो पता चलता है कि 21 सौ ईसा पूर्व के सिन्धु सभ्यता के लोग मांस पकाकर खाते थे फिर धीरे-धीरे उनकी जीवन शैली में सुधार आया और वह शाकाहारी हो गये। यानि आज जो लोग आज मांस खाते हैं वो अब 2020 में भी 21 सौ ईसा पूर्व का जीवन जी रहे हैं, इनकी जीवन शैली में कोई सुधार नहीं आया। दूसरा वामपंथी लिखते हैं कि आर्य लोग खाना बदोश थे लेकिन सिंधु घाटी की सभ्यता विश्वस्तरीय शहरी सभ्यता थी, तो जब वो खाना बदोश थे तो इन लोगों के पास टाउन-प्लानिंग का ज्ञान कहां से आया? क्या सिंधु घाटी की सभ्यता लार्ड मैकाले और लेनिन की औलादों ने विकसित की थी? जबकि सिन्धु सभ्यता से पूर्व तो पश्चिमी सभ्यता के पास ऐसे नगर नहीं थे, इसके बाद वामपंथी लिखते हैं कि सिन्धु घाटी के लोगों ने विशाल स्नानागार बनवाये और ऐसे समय जबकि ग्रीस, रोम और एथेंस का नामोनिशान भी नहीं था। तब उन्होंने ये सभ्यता विकसित कर ली थी।

क्या वामपंथी बता सकते कि जब सिन्धु घाटी के लोग दाल-चावल नहीं बना सकते थे, तो इस सभ्यता के पास टाउन-प्लानिंग का ज्ञान कहां से आया और उन्होंने स्वीमिंग पूल बनाने की तकनीक कैसे सीखी? वह भी ऐसे समय जबकि ग्रीस, रोम और एथेंस का नामोनिशान भी नहीं था। ये लिखते है कि सिंधु घाटी के लोग बहुत सभ्य थे, वे नगरों के निर्माण से लेकर जहाज आदि सभी कुछ बनाना जानते थे। इस काल के नगर मिले हैं। उक्त स्थलों से प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि यहां के लोग दूर तक व्यापार करने जाते थे और यहां पर दूर-दूर के व्यापारी भी आते थे।

इसके बाद रेड वाइन के दो तीन पेग मारे फिर लिखते हैं कि फिर इन्होंने भारत पर आक्रमण किया और यहाँ के मूल निवासियों को हरा दिया। अब यहाँ इनसे कोई सवाल पूछे कि ये सब कब हुआ तो कहते हैं कि यही कोई 15 सौ ईसा पूर्व यानि 3500 साल पहले चलों एक पल को इनके इस झूठ को मान भी लेते तो अब ये लिखते हैं कि पिछले पांच हजार सालों से ये लोग दलितों का शोषण कर रहे हैं। बाकि बचे 15 सौ साल का इतिहास पूछे तो उसे मनुवादी कहकर निकल लेंगे।

असल में जब पिछले दिनों इनकी ये आर्यन इन्वेजन थ्योरी पर 25 मई 2016 राखीगढ़ी में मिले सबूतों से झापड़ पड़ा जिसमें साफ दिया गया कि जानवरों की हड्डियां, गायों के सींग, बकरियों, हिरण और चिंकारे के जो अवशेष मिले इससे साफ यह पता चला की उस दौर में सभ्यता को किस तरह की पर्यावरण स्थितियों का सामना करना पड़ा था। तो इन्होंने सोचा अब क्या किया जाए तो फटाफट इसके विपरीत अब ये नया शोध सामने लाये कि सिन्धु सभ्यता के लोग पतीली में मांस पकाकर खाते थे एक पतीली से इन लोगों ने शोध सामने रख दिया।

आज जहाँ सवाल ये होना चाहिए था कि वामपंथी कौन है, ये लोग यहाँ कैसे आये, इनकी आय के स्रोत क्या है, सनातन धर्म के विनाश की सुपारी इन्हें किसने दी? देश में नक्सलवाद, माओवाद, दंगे, हिंसा और इतिहास को विकृत करने के अलावा इन लोगों ने भारत को क्या दिया? वहां उल्टा सिन्धु सभ्यता पर आर्यों पर सवाल लेकर खड़े हो गये। - *राजीव चौधरी*

प्रेरक प्रसंग

जब तक आर्यसमाज का मन्दिर नहीं बनता

यह घटना उत्तरप्रदेश के प्रयाग नगर की है। पूज्य पण्डित गंगाप्रसादजी उपाध्याय अपने स्वगृह दया-निवास (जिसमें कला प्रेस था) का निर्माण करवा रहे थे। घर पूर्णता की ओर बढ़ रहा था। एक दिन उपाध्यायजी निर्माण-कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। अनायास ही मन में यह विचार आया कि मेरा घर तो बन रहा है, मेरे आर्यसमाज का मन्दिर नहीं है। यह बड़े दु:ख की बात है।

इस विचार के आते ही भवन-निर्माण का कार्य वहीं रुकवा दिया। अब आर्यसमाज के भवन-निर्माण के उपाय खोजने लगे। ईश्वर की कृपा से उपाध्याय जी का पुरुषार्थ तथा धर्मभाव रंग लाया। मन्दिर का भवन भी बन गया। उसी मन्दिर में आगे 'कलादेवी हाल' निर्मित हुआ।

मैं यह घटना अपनी स्मृति के आधार पर लिख रहा हूँ। घटना का मूल स्वरूप यही है। वर्णन में भेद हो सकता है। यह घटना अपने एक लेख में किसी प्रसंग में स्वयं उपाध्यायजी ने उर्दू रिफार्मर साप्ताहिक में दी थी। उपाध्यायजी के जीवन की ऐसी छोटी-छोटी, अत्यन्त प्रेरणाप्रद घटनाएँ उनके जीवन-चरित्र 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' में दी हैं, परन्तु आर्यसमाजी स्वाध्याय से अब कोसों दूर भागते हैं। स्वाध्याय धर्म का एक खम्बा है। इसके बिना धार्मिक जीवन है ही क्या?

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

श्रीनगर घाटी स्थित आर्यसमाजों व संस्थाओं की सुरक्षा हेतु : उपराज्यपाल को सौंपा ज्ञापन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से घाटी के सभी आर्य संस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर को सौंपने की मांग

उपराज्यपाल महोदय ने दिया त्वरित कार्यवाही करने का आश्वासन

प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने भी लिखा उपराज्यपाल जी को पत्र

90के दशक में जम्मू-कश्मीर में फैली आतंकवाद और अलगाव की आग और आंधी ने केवल कश्मीरी पण्डितों/हिन्दुओं को ही प्रभावित नहीं किया अपितु आर्यसमाज मन्दिरों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों को भी प्रभावित किया। आतंकवाद के कारण अपना स्थान छोड़ने को मजूबर आर्यजनों को अपने मन्दिरों और विद्यालयों भी छोड़कर जाना पड़ा। अब जम्मू-कश्मीर से धारा 370 एवं 35ए हटाए जाने के बाद आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का एक प्रतिनिधि मंडल उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा से मिला। इस प्रतिनिधि मंडल में सार्वदेशिक सभा के उप मन्त्री श्री विनय आर्य जी, जम्मू-कश्मीर सभा के प्रधान श्री अरुण चौधरी जी, मन्त्री श्री अरुण गुप्ता जी के साथ अन्य अधिकारी भी सम्मिलित थे। सभा की ओर से महामहिम उपराज्यपाल जी से श्रीनगर स्थित आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की सुरक्षा तथा उनके सुचारु रूप से संचालन के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू- कश्मीर को सौंपने की मांग करते हुए आर्यसमाज के प्रतिनिधि मंडल द्वारा उनके नीरिक्षण की भी मांग की। महामहिम उप राज्यपाल जी ने आर्यसमाज की मांग का समर्थन करते हुए हर प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन दिया।

प्रतिनिधि मंडल में सम्मिलित सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य, जम्मू-कश्मीर सभा के प्रधान श्री अरुण चौधरी, मन्त्री श्री अरुण गुप्ता एवं अन्य।

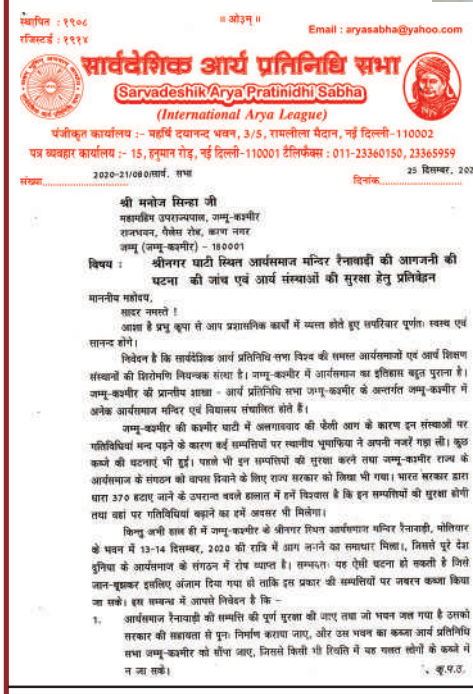

स्थापित : १९०८ ॥ ओ३म् ॥ Email : aryasabha@yahoo.com
रजिस्टर्ड : १९१४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Arya League)
पंजीकृत कार्यालय :- महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
पत्र व्यवहार कार्यालय :- 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 टैलिफैक्स : 011-23360150, 23365959

संख्या 2020-21/080/सार्व. सभा दिनांक 25 दिसम्बर, 2020

श्री मनोज सिन्हा जी
महामहिम उपराज्यपाल, जम्मू-कश्मीर
राजभवन, पैलेस रोड, करण नगर
जम्मू (जम्मू-कश्मीर) - 180001

विषय : श्रीनगर घाटी स्थित आर्यसमाज मन्दिर रैनावाड़ी की आगजनी की घटना की जांच एवं आर्य संस्थाओं की सुरक्षा हेतु प्रतिवेदन

माननीय महोदय,
सादर नमस्ते !
आशा है प्रभु कृपा से आप प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त होते हुए सपरिवार पूर्णतः स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

निवेदन है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विश्व की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था है। जम्मू-कश्मीर में आर्यसमाज का इतिहास बहुत पुराना है। जम्मू-कश्मीर की प्रान्तीय शाखा - आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर में अनेक आर्यसमाज मन्दिर एवं विद्यालय संचालित होते हैं।

जम्मू-कश्मीर की कश्मीर घाटी में अलगाववाद की फैली आग के कारण इन संस्थाओं पर गतिविधियां मन्द पड़ने के कारण कई सम्पत्तियों पर स्थानीय भूमाफिया ने अपनी नजरें गड़ा ली। कुछ कब्जे की घटनाएं भी हुई। पहले भी इन सम्पत्तियों की सुरक्षा करने तथा जम्मू-कश्मीर राज्य के आर्यसमाज के संगठन को वापस दिलाने के लिए राज्य सरकार को लिखा भी गया। भारत सरकार द्वारा धारा 370 हटाए जाने के उपरान्त बदले हालात में हमें विश्वास है कि इन सम्पत्तियों की सुरक्षा होगी तथा वहां पर गतिविधियां बढ़ाने का हमें अवसर भी मिलेगा।

किन्तु अभी हाल ही में जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर स्थित आर्यसमाज मन्दिर रैनावाड़ी, मोतियार के भवन में 13-14 दिसम्बर, 2020 की रात्रि में आग लगने का समाचार मिला।, जिससे पूरे देश दुनिया के आर्यसमाज के संगठन में रोष व्याप्त है। सम्भवतः यह ऐसी घटना हो सकती है जिसे जान-बूझकर इसलिए अंजाम दिया गया हो ताकि इस प्रकार की सम्पत्तियों पर जबरन कब्जा किया जा सके। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि -

1. आर्यसमाज रैनावाड़ी की सम्पत्ति की पूर्ण सुरक्षा की जाए तथा जो भवन जल गया है उसको सरकार की सहायता से पुनः निर्माण कराया जाए, और उस भवन का कब्जा आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर को सौंपा जाए, जिससे किसी भी स्थिति में यह गलत लोगों के कब्जे में न जा सके।

कृ.प.उ.

स्थापित : १९०८ ॥ ओ३म् ॥ Email : aryasabha@yahoo.com
रजिस्टर्ड : १९१४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Arya League)
पंजीकृत कार्यालय :- महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
पत्र व्यवहार कार्यालय :- 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 टैलिफैक्स : 011-23360150, 23365959

संख्या........ दिनांक........

-: 2 :-

2. आर्यसमाज रैनावाड़ी की आगजनी की घटना की उच्चस्तरीय जांच कराने का और दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने का सम्बन्धित अधिकारियों को आदेश जारी करने की कृपा करें।
3. श्रीनगर घाटी स्थित आर्यसमाज की अन्य सभी संस्थाओं को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जाए ताकि अन्य किसी संस्था पर ऐसी घटनाएं अंजाम देकर कब्जे आदि की कार्यवाही न की जा सके।
4. आर्यसमाज का एक प्रतिनिधि मंडल घाटी स्थित आर्यसमाज की सम्पत्तियों का नीरिक्षण करना चाहता है, इस हेतु आपसे निवेदन है कि आप इसकी स्वीकृति एवं आर्यसमाज के अधिकारियों के लिए सुरक्षा व्यवस्था प्रदान कराने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी करने की कृपा करें।
5. घाटी स्थित अन्य आर्य संस्थाओं की सूची इस प्रकार है-

S.No	Name of Arya Samaj	Properties affiliated
1	Arya Samaj Mandir Wazir Bagh Srinagar.	(i) DAV School at Magar Mal Bagh & (ii) DAV school at Jawahar Nagar
2	Arya Samaj Mandir Rainawari (Naidyar) Srinagr	(i)Arya Samaj Mandir with open land but someone is running a DAV School (ii) Arya Samaj at Jogi lankar but in the name of a school someone is running a Maddrsa without permission
3	Arya Samaj Mandir Karan Nagar Srinagar	i. Vidya Niketan School ii. Open land in the premises of Arya Samaj which is occupied by the security forces but rent is not being paid to us.
4	Arya Samaj Mandir Maharaj Ganj Srinagar, with open land	As per information some one is running school without our permission.
5	Arya Samaj Mandir Hajuri Bagh	Putri Pathshala with open land

6. DAV SCHOOL AND ARYA SAMAJ, JAWAHAR NAGAR, SRINAGAR

धन्यवाद सहित

भवदीय

(अरुण चौधरी) प्रधान, मो. 9419187171
(अरुण गुप्ता) मन्त्री, मो. 6005693580
आर्य प्रतिनिधि सभा, जम्मू-कश्मीर
(विनय आर्य) उपमन्त्री, मो० : 9958174441 सा. आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

नोट : आप इस विषय में जम्मू-कश्मीर के उपरोक्त अधिकारियों से जो भी जानकारी चाहेंगे वे उपलब्ध कराने के लिए तत्पर रहेंगे।

स्थापित : १९०८ ॥ ओ३म् ॥ Email : aryasabha@yahoo.com
रजिस्टर्ड : १९१४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Arya League)
पंजीकृत कार्यालय :- महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
पत्र व्यवहार कार्यालय :- 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 टैलिफैक्स : 011-23360150, 23365959

संख्या 2020-21/078/सार्व. सभा दिनांक 25 दिसम्बर, 2020

सेवा में,
श्री मनोज सिन्हा जी
महामहिम उपराज्यपाल, जम्मू-कश्मीर
राजभवन, पैलेस रोड, करण नगर
जम्मू (जम्मू-कश्मीर) - 180001

विषय : आर्यसमाज के प्रतिनिधि मंडल से भेंट

माननीय महोदय,
सादर नमस्ते !
आशा है प्रभु कृपा से आप प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त होते हुए सपरिवार पूर्णतः स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

निवेदन है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विश्व की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था है। जम्मू-कश्मीर में आर्यसमाज का इतिहास बहुत पुराना है। जम्मू-कश्मीर की प्रान्तीय शाखा - आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर में अनेक आर्यसमाज मन्दिर एवं विद्यालय संचालित होते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि मंडल आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के अधिकारियों के साथ आपसे भेंट करने के लिए पहुंच रहा है।

कोविड के कारण मैं स्वयं आपसे भेंट करने नहीं आ पा रहा हूं। कोविड काल के उपरान्त मैं स्वयं भी आपसे भेंट करने अवश्य आने का प्रयास करूंगा।

आपसे निवेदन है कि आप श्रीनगर घाटी स्थित आर्यसमाज मन्दिरों, विद्यालयों एवं अन्य आर्य संस्थानों की सुरक्षा हेतु समुचित व्यवस्था करने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी करने की कृपा करें।

धन्यवाद

भवदीय
(सुरेशचन्द्र आर्य)
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

सम्पर्क :-
12, रॉयल क्रीसेन्ट, थलतेज हाईवे,
अहमदाबाद (गुजरात)- 380004
मो. 9824072509
Email : scba66@gmail.com

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 94वें बलिदान दिवस के अवसर विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों में एम.डी.एच. परिवार और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित कराए गए श्रद्धांजलि विज्ञापन

दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा व अन्य पत्रों में हुआ प्रकाशन : आर्यसमाज की ओर से आभार एवं धन्यवाद

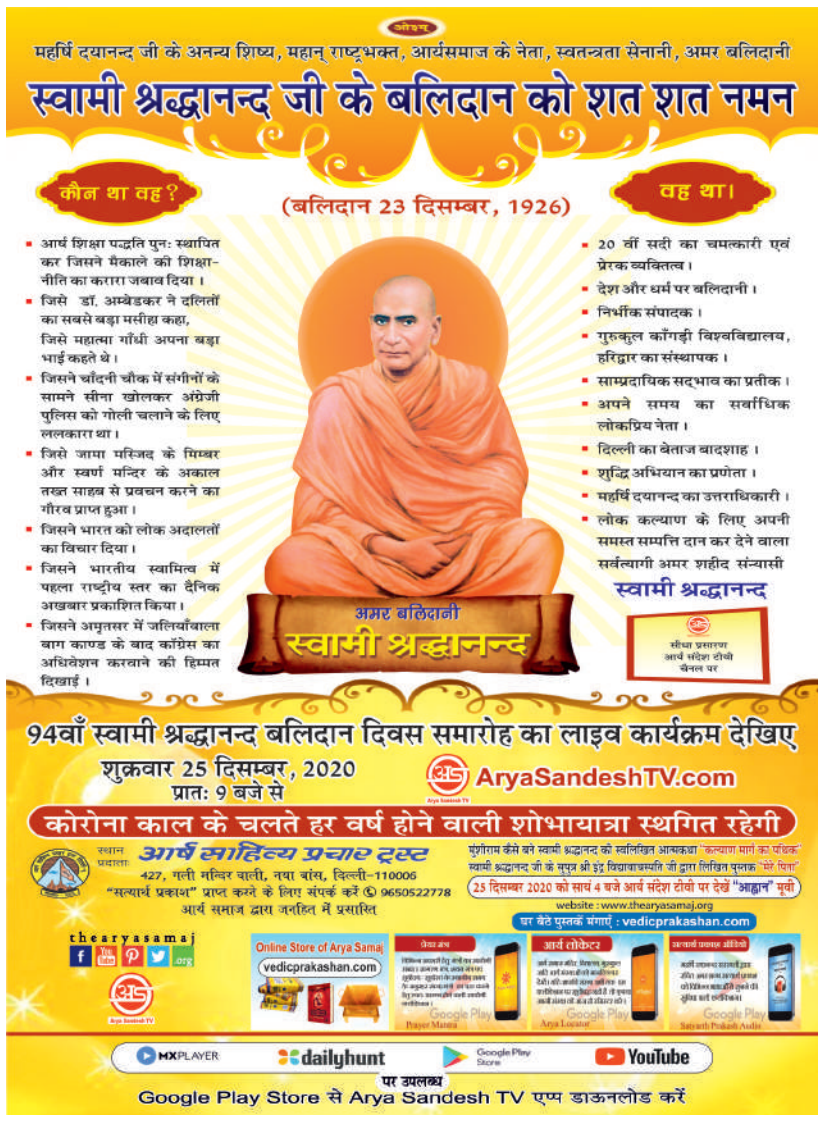

स्वामी श्रद्धानंद जी के 94वें बलिदान दिवस पर उनकी जीवनी के शिलापट्ट का हुआ उद्घाटन

23 दिसंबर, 20, रानीबाग, दिल्ली। आर्य समाज रानी बाग द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के 94वें बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानंद पार्क में उनकी प्रेरक जीवनी का शिलापट्ट स्थापित कर उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर भाजपा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता जी, दिल्ली भाजपा के संगठन महामंत्री श्री सिद्धार्थन जी, केशवपुरम के अध्यक्ष श्री राजकुमार भाटिया जी, महामंत्री मंजीत सिंह जी, निगम पार्षद वन्दना जेटली जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, सभा मन्त्री श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, उत्तर पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य जी, स्थानीय आर.डब्लू.ए.के प्रधान, रानीबाग व्यापार मंडल के प्रधान, सचिव और कोषाध्यक्ष सहित समस्त अधिकारी, आर्यजन उपस्थित थे। मंच का संचालन करते हुए श्री जोगेंद्र खट्टर जी महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ ने स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रेरक जीवन पर अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानदं जी एक महान निर्भीक संन्यासी थे। उन्होंने अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती खोलकर उन्हें गोली चलाने के लिए ललकारा था। स्वामी जी के अदम्य साहस और वीरता के सामने अंग्रेजों की संगीनें भी झुक गई थी।

मुख्य अतिथि श्री आदेश गुप्ता जी ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए उनके महान परोपकारी कार्यो का बखूबी गुणगान किया और आर्य समाज की मांग को स्वीकार करते हुए यह घोषणा की कि दिल्ली नगर निगम के अन्तर्गत आने वाले सभी पार्कों में जहां महापुरुषों के नाम अंकित हैं वहीं उनकी प्रेरक जीवनी भी लगवाई जाए।

स्वामी श्रद्धानंद पार्क रानी बाग में स्वामी श्रद्धानदं जी के प्रेरक जीवन के साथ-साथ आर्य समाज के नियमों का शिलापट्ट भी लगाया गया।

– ***जोगेन्द्र खट्टर, मन्त्री***

महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर में 21 कुंडीय यज्ञ एवं भजन संध्या के साथ स्वामी श्रद्धानन्द को किया स्मरण

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का 94वां बलिदान दिवस 25 दिसंबर को पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र द्वारा गौशाला परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर 21 कुंडीय यज्ञ एवं भजन संध्या का कार्यक्रम स्वामी श्रद्धानंद जी को श्रद्धांजलि देते हुए गीतों से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य शिवा शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ से हुआ। पूर्वी दिल्ली की विभिन्न समाजों के सम्मानित अधिकारियों एवं सदस्यों ने बड़ी श्रद्धा, प्रेम और समर्पण भाव से यज्ञ किया। मुख्य यजमान के रूप में श्री ताराचंद जी तायल, श्री अरविंद गुप्ता, श्री अरुण गुप्ता, श्री सुभाष ढींगरा एवं श्री शिवदत्त शर्मा जी सम्मिलित हुए। श्री सतीश सत्यम जी द्वारा भजनों की सुंदर मनोहारी प्रस्तुति की गई। स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के प्रेरक संस्मरण आचार्य श्री ब्रह्मदेव जी विद्यालंकार एवं उदय भानु शास्त्री जी द्वारा प्रस्तुत किए गए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य केंद्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश आर्य जी की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री अशोक गुप्ता, मंत्री श्री सुनील यादव एवं कोषाध्यक्ष ऋषिराज वर्मा जी, श्री हरिओम बंसल जी ने सहयोग दिया।

– ***पृथ्वीपाल आर्य, व्यवस्थापक***

गुरुग्राम में आर्य केंद्रीय सभा एवं आर्य समाज न्यू कॉलोनी ने मनाया स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का 94 वां बलिदान दिवस दिल्ली सहित संपूर्ण देश में 25 दिसंबर को आयोजित किया गया। इससे पूर्व आर्य केंद्रीय सभा गुरुग्राम एवं आर्य समाज न्यू कॉलोनी गुरुग्राम के संयुक्त तत्वावधान में 20 दिसंबर 2020 को स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राम दास जी ने की। मुख्य वक्ता श्री राजू वैज्ञानिक एवं दिल्ली प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी थे। ध्वजारोहण समाजसेवी श्री मोहित मदनलाल ग्रोवर ने किया। भजन श्रीमती सुदेश आर्या जी के हुए। मुख्य अतिथि के रुप में श्री बी.आर. सीकरी, वरिष्ठ भाजपा नेता एवं श्रीमती सुनीता यादव महापौर गुरुग्राम सम्मितिल हुए। विशिष्ट अतिथि के रूप में परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री कन्हैया लाल आर्य जी, श्री नवीन गोयल, श्री अशोक गुप्ता, निगम पार्षद श्रीमती सीमा पाहुजा एवं आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय के प्रधान श्री भारत भूषण आर्य की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वामी सच्चिदानंद जी के ब्रह्मत्व मे आयोजित यज्ञ से हुआ। सभा को संबोधित करते हुए आचार्य राजू वैज्ञानिक ने स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा किए गए कार्यो से सभी कार्यकर्ताओं और जन सामान्य को अवगत कराया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा स्वामी श्रद्धानंद जी ने मुख्य रूप से जो शुद्धि का जो कार्य किया है आज उसकी अत्यंत आवश्यकता है जो लोग वैदिक धर्म से दूर हो चुके हैं उन्हें वापस लाने की आज तत्काल आवश्यकता है। – ***लक्ष्मण पाहुजा, प्रधान***

किसान आनन्दोलन के बीच स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर यज्ञ

देश भर से दिल्ली के बॉर्डर पर विरोध प्रदर्शन कर रहे किसानो के बीच भी स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस आयोजित किया गया। आर्य समाज सूरजमल विहार और पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा गाजीपुर बॉर्डर पर आयोजित इस कार्यक्रम में किसानों ने पुरे उत्साह के साथ भाग लिया। आर्य विचारधरा से जुड़े किसानो के अलावा सिक्ख समुदाय के किसानों ने भी पुरे उत्साह के साथ यज किया। यज्ञ महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के सम्वर्धक श्री दिनेश आर्य एवं श्री शैली जी द्वारा कराया गया और किसानों को स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान और आर्य इतिहास से भी अवगत करवाया। – ***अशोक गुप्ता, प्रधान***

जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करें

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....सफलता पैसे से खरीदने वाली वस्तु नहीं है। इसके लिये दृढ़ इच्छा शक्ति, प्रतिबद्धता, जिम्मेदारी और कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता होती है। आप जितना परिश्रम करोगे भाग्य उतना ही तुम्हारा साथ देगा। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये जी जान से जुट जाता है वह उतनी ही जल्दी सफल होता है। कठोर परिश्रम के बिना आपकी प्रतिभा और दृढ़ इच्छा शक्ति भी बेकार है।...

सामान्य रूप में सफलता से अभिप्राय किसी लक्ष्य की प्राप्ति से है। परन्तु सफल जीवन वह है जो प्रत्येक मोर्चे पर विजयी होता हो। स्वस्थ शरीर, मानसिक सन्तुलन, उत्तम चरित्र, आर्थिक संसाधन मित्र वर्ग और समाज में मान-सम्मान वाले व्यक्ति को ही सफल जीवन वाला माना जा सकता है। सफलता के पहले सूत्र को ही यदि आचरण में लाया जाये तो अन्य कुछ करने के लिये शेष नहीं रह जाता।

जीवनेच्छा संघशक्ति चारिहूयं
कायिकं बलम्।
सदैवोद्यत भावस्य पंचैते जय हेतवः।।

जीने की इच्छा, मिल कर रहना, चरित्र, शरीर का बल और किसी कार्य को करने के लिये सदैव उद्यत रहना ये पाँच जीवन में विजय दिलाने वाले होते हैं। सुनियोजित जीवन के से पाँच आधार स्तम्भ है।

दृढ़ इच्छा शक्ति - व्यक्ति की सफलता में दृढ़ इच्छाशक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति जैसा मन में सोचता है और उसे प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय करता है एक दिन उसे अवश्य ही प्राप्त कर लेगा। जैसे थोड़ी सी अग्नि शीत का निवारण करने में समर्थ नहीं होती उसी भाँति जिन का इच्छा शक्ति दुर्बल हो गई है तो जानो कि सफलता उस से कोसों दूर चली गई है।

जिम्मेदारी - जिम्मेदारी और सफलता दोनों साथ चलते हैं। जिम्मेदारी दी नहीं जाती अपितु ली जाती है। आपको योग्य व्यक्ति समझ कर जो जिम्मेदारी दी है उसे एक चुनौती मानकर हृदय से स्वीकार कीजिये। व्यक्ति जिम्मेदारी से ही अनुभव प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है और सफलता उसके कदम चूम लेती है।

कठोर परिश्रम - सफलता पैसे से खरीदने वाली वस्तु नहीं है। इसके लिये दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रतिबद्धता, जिम्मेदारी और कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता होती है। आप जितना परिश्रम करोगे भाग्य उतना ही तुम्हारा साथ देगा। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये जी जान से जुट जाता है वह उतनी ही जल्दी सफल होता है। कठोर परिश्रम के बिना आपकी प्रतिभा और दृढ़ इच्छा शक्ति भी बेकार है।

सकारात्मक दृष्टिकोण - सकारात्मक सोच का प्रभाव आपके कार्य करने की शक्ति पर पड़ता है तथा आप उस कार्य को दो गुने उत्साह से करने में लग जाते हैं। दूसरा लाभ यह होगा कि आप कुछ नया करने की सोचेंगे। जिससे आपकी समझ की प्रशंसा होगी। सकारात्मक दृष्टिकोण वालों को ही आगे अवसर मिलते हैं।

कुछ नया करें - साधारण श्रेणी के लोग भेड़चाल से चलने वाले होते हैं। परन्तु जी दिव्य शक्ति से सम्पन्न होते हैं वे अपना नवीन मार्ग बनाते हैं और ऐसे कार्य कर जाते हैं जिन्हें देखकर लोग दाँतों तले अगुली दबा लेते हैं। थामस अल्वा एडिसन ने बिजली का बल्ब बनाने के लिये दस हजार बार प्रयोग किये तब कहीं उन्हें सफलता प्राप्त हुई। मेडम क्यूरी दम्पती ने रेडियम की प्राप्ति के लिये भट्ठी में अपने घर का फर्नीचर भी झोंक दिया और उनकी अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति हुई। नवीन उपलब्धि के लिये अपना सर्वस्व दाव पर लगाना होता है।

संकटों को चुनौती दें
जवानी नाम है बलिदान का विषपान करने का। चुनौती संकटों को दे दुःखों का मान करने का।।

यदि हम महापुरुषों के जीवन चरित्र पर दृष्टिपात करें तो पता चलेगा कि उन्होंने अशिक्षा, अत्याचार, अन्याय और अभाव को हटाने के लिये समूची व्यवस्था को ही चुनौती दी और इसके लिये आजीवन संघर्ष किया। जेलें काटीं। कोल्हू चलाये। बलिदान दिये परन्तु अन्याय के आगे झुके नहीं। कहने का अभिप्राय यही है कि सोना अग्नि में तपकर ही कुन्दन बनता है। गहरे पानी में डुबकी लगाने से ही मोती मिलते हैं। किनारे पर बैठे रहने वालों को कोड़ियाँ प्राप्त होती है।

पोत अगणित इन तरंगों ने डुबाये मानता मैं।
पार भी पहुंचे बहुत से बात यह भी जातना मैं।।
किन्तु होता सत्य यदि यह भी सभी जनयान डूबे।
पार जाने की प्रतिज्ञा आज बरबस ठानता मैं।
डूबता मैं किन्तु उतराता सदा व्यक्तित्व मेरा।
हों युवक डूबे भले ही है कभी डूबा न यौवन।
तीर पर कैसे रूकूँ मैं आज लहरों पर निमन्त्रण।।

- शेष अगले अंक में

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

Continue From Last issue

.....while his class-fellows read only their textbooks, he read other books also. One of these books awakened in him his deep spiritual nature. After reading it, he began to repeat certain words which have a spiritual meaning. He also learnt how to control his breath. One day his mother saw him doing this. She felt annoyed and asked him to give it up. But he replied, "Dear mother, look at the sky. The moon is shining there and the stars are twinkling. Then look around on earth. You find beautiful, green trees every where. Among their branches small birds sing their del ightful songs. Don't you think there is someone who made all these things? It is to find Him that I am making efforts. Please do not feel annoyed with me. Father has said to me many times that we should all seek God. Why not let me try in my own way?" This was the beginning ofhis spiritual life.....

It was of such parents that Guru Dutt was born. At first he was given the name of Mula. But when he was taken to his guru, he called him Bairagi. This was rather a peculiar name. But it seems the guru understood the child better than other people. He could see, even at that early age, that Gum Dutt cared little for worldly things. He showed signs of becoming a recluse.

When the boy was twelve years old he was taken to Hardwar. There another Brahmin called him by the name ofGuran Ditta, which means that he was the gift of a guru. After some time he came to be known as Guru Dutt, which meant the same thing.

When Guru Dutt was five years old his education was taken in hand by his father. He did not send him to school but taught him at home. This was because he believed that the teachers in the Primary Schools were not quite competent. They beat and punished students, which seemed wrong to the father. He, on the other hand, thought that children should be made to learn without being punished. He thought that they should be given presents and sweets in order to encourage them to learn.

Guru Dutt learnt things very quickly. He mastered the Urdu alphabet in a very short time. Then he read Persian. In Mathematics he took a special interest. He could do mentally even the most difficult questions of multiplication and division. It is said that he never required a slate or pencil and paper for solving such questions. In order to teach him English his father himselflearnt the language. Even in this the boy did well.

At the age of eight the boy was admitted into a school at Jhang. There he made remarkable progress in his studies in a short time. He read the most difficult books in Persian without much trouble. He was also able to quote from memory a large number of couplets from these books. After a few years he passed the Middle School Examination from this school.

But his education at school was nothing compared with his training at Home. His father always kept him away from bad company. He never allowed him to mix with evil-minded boys. He also took care that he should eat the right sort of food and have proper exercise. He drank plenty of milk. But he conceived a dislike for meat even at an early age, and would not take it even when asked by his father. Soon Guru Dutt grew up into a very fine lad.

But while his class-fellows read only their textbooks, he read other books also. One of these books awakened in him his deep spiritual nature. After reading it, he began to repeat certain words which have a spiritual meaning. He also learnt how to control his breath. One day his mother saw him doing this. She felt annoyed and asked him to give it up. But he replied, "Dear mother, look at the sky. The moon is shining there and the stars are twinkling. Then look around on earth. You find beautiful, green trees every where. Among their branches small birds sing their del ightful songs. Don't you think there is someone who made all these things? It is to find Him that I am making efforts. Please do not feel annoyed with me. Father has said to me many times that we should all seek God. Why not let me try in my own way?" This was the beginning ofhis spiritual life.

But when Guru Dutt joined the Government High School, Multan, his faith in God began to wane. Some say that this was due to the study of scientific books. Others believe that it was the result of his study of other books. But it is a fact that for some time he professed atheism. A little later, however, he came under the influence ofthe Arya Samaj. He attended its meetings regularly and read some of thebooks published by it. The result was that he joined the Arya Samaj in 1880. He then came to believe in God once again.

At Multan, Guru Dutt impressed everybody with his learning. He was a very well-read boy and his memory was wonderful. Once a gentleman repeated more than a hundred names which had no connection with one another. Guru dutt was able to repeat them again in the same order. His memory was further strengthened by his wide studies. Not only did he read every book in his town library, but he read most of the books in the town library as well.

He knew a great deal of Persian. He also mastered the Ashtadhyayi, the most difficult of books on Sanskrit grammar. He knew Arabic. He was quite good at English and was able to read through the works of Milton, Shakespeare and Cowper. Besides these, he had a knowledge of Logic, Philosophy and Physics. It was no wonder that he was the fifth on the list of successful candidates in the Entrance Examination.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

ओ३म्

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2078-78 तद्नुसार सन् 2021

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	पौष अमावस्या, वि. 2077	13/01/2021	बुधवार
2.		मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल, 1 वि. 2077	14/01/2021	गुरुवार
3.		गणतन्त्र दिवस	पौष शुक्ल, 13 वि. 2077	26/01/2021	मंगलवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2077	16/02/2021	मंगलवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि. 2077	6/03/2021	शनिवार
6.	**ऋषि-पर्व**	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2077	08/03/2021	सोमवार
7.	**ज्योति-पर्व**	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2077	11/03/2021	गुरुवार
8.	**वीर-पर्व**	पं.लेखराम बलिदान दिवस (वीर तृतीया)	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2077	16/03/2021	मंगलवार
9.	**मिलन-पर्व**	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2077	28/03/2021	रविवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2078	13/04/2021	मंगलवार
11.		वैशाखी	चैत्र शुल्क, 2 वि.2078	14/04/2021	बुधवार
12.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2078	21/04/2021	बुधवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	चैत्र शुक्ल, 14 वि.2078	26/04/2021	सोमवार
14		विश्व पर्यावरण दिवस	ज्येष्ठ कृष्ण, 11 वि.2078	05/06/2021	शनिवार
15		अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस	ज्येष्ठ शुक्ल, 11 वि.2078	21/06/2021	शनिवार
16.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2078	11/08/2021	बुधवार
17.	**वेद-प्रचार समारोह**	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/ हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2078 श्रावण पूर्णिमा, वि. 2078	22/08/2021	रविवार
18		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2078	30/08/2021	सोमवार
19		स्वतन्त्रता दिवस	श्रावण शुक्ल, 7 वि. 2078	15/08/2021	रविवार
20.		गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती	आश्विन कृष्ण, 11 वि. 2078	02/10/2021	शनिवार
21.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2078	15/10/2021	शुक्रवार
22.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2078	17/10/2021	रविवार
23.	**क्षमा-पर्व**	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2078	04/11/2021	गुरुवार
24.	**बलिदान-पर्व**	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण, 4, वि. 2078	23/12/2021	गुरुवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

पृष्ठ 2 का शेष

पश्चिम बंगाल की राजनीति लेनिन से ....

फिर आता है साल 2019 का लोकसभा चुनाव, बंगाल में कहावत मशहूर है - 'करबो लरबो जितबो', इस कहावत को सौ टका सच बनाने में प्रधानमंत्री मोदी और भी जुटे और ममता बनर्जी भी, वैसे तो कहा जाता है कि दिल्ली की सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर जाता है, लेकिन बीजेपी ने दिल्ली पहुंचने के लिए उत्तर प्रदेश के साथ कोलकाता के रास्ते को भी नापना शुरू कर दिया। लेफ्ट के साथ लंबे संघर्ष के बाद ममता बैनर्जी ने बंगाल की सत्ता हासिल की थी तो अब बीजेपी बंगाल की राजनीति में अपने पैर जमा चुकी है, इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा और अमित शाह की तूफानी रणनीति बंगाल की जमीन पर रंग दिखा रही है। बिहार विजय के बाद बीजेपी रणनीतिकारों को अब कोलकाता की रायटर्स बिल्डिंग ज्यादा दूर नहीं दिख रही है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी बंगाल में दूसरे नंबर की पार्टी बन गयी।

लेकिन इस सबके बीच एक चीज भी यहाँ है और वो बंगाल में करीब 30 फीसदी मुस्लिम मतदाता जो राज्य की 294 सीटों में से करीब-करीब 100 पर निर्णयक भूमिका में हैं। 2010 के बाद से बंगाल में मुस्लिम मतदाता टीएमसी का कोर वोट बैंक माना जाता है, जहाँ अब बीजेपी बंगाल में एनआरसी का मुद्दा लेकर आगे बढ़ रही है वही चुनावों में अपना वोट बैंक बढ़ाकर स्थिति मजबूत करने के लिए मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी ने बड़ा दाव खेलते हुए प्रदेश की 119 बांग्लादेशी शरणार्थियों की कॉलोनियों को नियमित कर दिया है। इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री बैनर्जी ने सभी बांग्लादेशी शरणार्थियों को भारत का नागरिक बताते हुए किसी से भी नहीं डरने की बात कही है। इसका नतीजा ये है कि वोटों की राजनीति ने इस राज्य को इस स्थिति में ला दिया कि शांतिदूत बेखौफ पुलिस की गाड़ी के बोनट पर बैठ जाते हैं। दूसरी तरफ पुलिस रामभक्तों को मंदिर से घसीटकर निकालकर पकड़ ले जाती है। अब एक बार फिर चुनाव होने जा रहे है लेकिन इस बार लोगों की आस्था में वाम के बजाय श्रीराम है। - *सम्पादक*

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10, 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

शोक समाचार

श्री मिठाई लाल सिंह जी की धर्मपत्नी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की धर्मपत्नी, आर्यसमाज माटुंगा व श्री दयानन्द बालक/बालिका विद्यालय माटुंगा की प्रबन्ध ट्रस्टी श्रीमती सावित्री सिंह जी का 29 दिसम्बर, 2020को 89 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से माटुंगा के पास सायन शमशान में हुआ।

आर्यसमाज सीतापुर (उ.प्र.) के प्रधान श्री वीर जी का निधन

आर्यसमाज सीतापुर (उ.प्र.) के वयोवृद्ध सदस्य, पूर्व अध्यक्ष एवं मन्त्री श्री वीर जी का दिनांक 30 दिसम्बर, 2020 को प्रात: 3:30 बजे आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ गोपाल घाट स्थित शमशान घाट में किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 28 दिसम्बर, 2020 से रविवार 3 जनवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31/12-01/01/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-22-2023

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 दिसम्बर, 2020

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2021 का

कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1000/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। साइज 20'×30' सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150,

मो. 09540040339

दलितोद्धार सभा ने मनाया स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान दिवस

अखिल भारतीय दलितोद्धार सभा आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गंज नई दिल्ली में 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का 94वां बलिदान दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने मंतव्य में विशेष रूप से कहा कि हमें स्वामी श्रद्धानंद जी के दलितोद्धार के उस मुख्य कार्य को पुन: गति देनी होगी जो मानव से मानव को जोड़ने का कार्य था अर्थात अपने बिछड़े हुए भाइयों को हमें पुन: गले लगाना होगा तभी हमारी आर्य जाति बची रहेगी। - ***मन्त्री***

प्रतिष्ठा में,

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें। एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं -

https://bit.ly/34tP71p

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह